pages curaj varta 2018 march_Layout 1 18-04-2018 12:38 Page 1

CURAJ VARTA

Issue:2, March, 2018 **A Lab Journal Published by the Department of Culture and Media Studies** For Internal Circulation only

Use artificial intelligence to build the nation: VC Prof. Arun K Pujari

Dr. Nicholas Lakra

Photo: Vipul Makwana

The Central university of Rajasthan celebrated 69th Republic Day with great fervour and zeal. “Fostering the doctrine of fraternity and equality, we train our students to become good citizens in order to make our country a great nation. Our country must be innovative and for that our students also must be innovative, use artificial intelligence. For this, we need to go out of usual and traditional syllabus”, the Vice Chancellor, Prof. Arun K. Pujari said in the function. The Vice-Chancellor, in a formal speech talked at length about the Artificial Intelligence. “Today we talk so much about digital economy. In every field, there is use of artificial intelligence. Our university is already training the students about artificial intelligence, and in near future, it will be an interdisciplinary subject here”, he added. He told that the students should not study merely to acquire grade but to learn innovations of technology in order to help and build human society. In this occasion, the Vice-Chancellor shared his concerns that the shortage of water was a big problem in the campus due to which the university was not able to admit more students. But he also shared the good news that the Central Government has granted enough money towards this need. In this regard, as he told, with the consent of Rajasthan government, pipeline will be extended from Kishangarh to avail Bisalpur water in the campus. “As this problem is solved, our university will admit more students, and will initiate many more programs”, Prof. Pujari said. Prof. Arun K Pujari also emphasized that the Departments of great importance like Public Policy Law and Governance (PPLG) and Culture and Media Studies (CMS) to be strengthen more. He told that the University was to sign MOU with Indira Gandhi National Centre for Art (IGNCA) in order to initiate studies on culture and heritage. "Conservation of cultural heritage was an important area of research studies. For this purpose, our university is in the process of initiating a course on Cultural Informatics. Rajasthan has many archeological sites but no university offers course on archeological studies" he expressed.The Vice Chancellor also shared that the Central Government has sanctioned money towards building of Central School in the Campus. “We envision establishing our Central School the best in this area. We have good labs in Physics, Chemistry and Life Science. The students of Central School also will benefit from these labs and highly qualified teachers”, he said. The VC, Prof. Pujari stated that among the 17 universities of 2009, the Central University of Rajasthan stands top. “Our University must be in top position not only among the 17 new Central Universities but among all the Central Universities that are already established in our country. Our students must do good research, be innovative, become industrialists and make CURAJ a brand name. Hence, we all need to work selflessly. Students must study well, classes must run well, and teachers should use research informed teaching”, Prof. Pujari addressed the gathering.

Photo: Vipul Makwana

सांस्कृतिक विरासत की संरक्षण हेतु स्थापना दिवस मना

रिंकू कुमार मीणा

फोटो– रिंकू

राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय ने 06 मार्च को 10वां स्थापना दिवस सांस्कृतिक विरासत की संरक्षण’ विषय को समर्पित करते हुए मनाया। इस अवसर पर एक विषेष व्याख्यान व सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सुप्रसिद्ध चित्रकारी, फोटोग्राफी, कलाकार, बिगड़ी हुई चित्रों को फिर से स्वस्थ करने वाला, पुरालेखपाल इस कार्यक्रम के मुख्य अथिति थे। उन्होंने अजन्ता की गुफाओं की धरोहर पर रोचक व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि भारतीय पुरातात्विक विरासत हमारी पहचान है, वे विनष्ट होते जा रहे है। विरासत हमें हमारे पूर्वजों सें मिला है, उसको सुरक्षित रखने के लिये हमें समर्पित होना है। उन्होंने बताया कि अजन्ता की गुफाओं की कलाओं की सरंक्षण के लिए वह स्वयं 27 वर्षों से कार्यरत हैं। बताया कि उनका लक्ष्य भारतीय पुरातत्व की रक्षा और उनको फिर से ठीक करना है । इसमें काम करने के लिए सरकार से इजाजत लेने के लिये उनको 17 साल का वक्त लगा। व्याख्यान के दौरान उन्होंने दृश्य प्रस्तुति के माध्यम से बहुत सारी जानकारियां दी। इस मौके पर केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति ए.के. पुजारी भी मौजूद रहे। उन्होंने अपने भाषण में स्थापना दिवस पर बाते की और प्रसाद पवार के कामों की प्रशंसा की। उन्होने इस विश्वविद्यालय में संस्कृतिक धरोहर के संरक्षण जैसे अकादमिक पाठ्यक्रम शुरु करने की बात कही। इस कार्यक्रम में रजिट्रार के.वी. एस. कामेश्वर राव, शिक्षक गण, और भारी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित थे। इस अवसर पर पुरस्कार वितरण भी हुआ।

(*Interview on Page 2*)

चौथा दीक्षांत समारोह सम्पन्न

केंद्रीय विश्वविद्यालय राजस्थान में पहली बार पीएचडी उपाधि प्रदान की गयी

फोटो– रिंकू

महिमा सिंह

‘‘**दी**क्षांत समारोह को शिक्षा का अंत ना समझें’। हमें हमेशा नए विचारों और ज्ञान की ओर बढ़ना चाहिए और सही मायने में शिक्षित वही है जो यह सीख जाएं कि सीखना कैसे है’’ उक्त बातें डॉ पी के मिश्रा ने राजास्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय के चौथे दीक्षांत समारोह के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा। डॉ पी के मिश्रा प्रधानमंत्री के प्रमुख अपर सचिव के पद पर कार्यरत है। मुख्य अतिथि डॉ मिश्रा ने 22 मेधावी छात्र–छात्राओं को गोल्ड मेडल और डिग्री प्रदान की। इस वर्ष कुल 486 विद्यार्थियों ने उपाधियां प्राप्त की। उन्होंने सभी डिग्री प्राप्तकर्ता को बधाई दी और कहा शिक्षा के ज़रिए समाज में सुधार और सक. ारात्मक बदलाव लाने के लिए युवाओं को आगे आना चाहिए। राजास्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय का चौथा दीक्षांत समारोह 13 नवम्बर 2017 को मुख्य सभागार में सम्पन्न हुआ।डॉ मिश्रा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि रा. जस्थान अपने इतिहास, विरासत और रंगारंग कला और संस्कृति के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। इस विश्वविद्यालय में पढ़ना गौरव की बात है। च्वनप्राश जैसी महत्वपूर्ण आयुर्वेदिक औषधि की जड़ भी राजस्थान में मिलती है। उन्होंने प्रधानमंत्री की डिजिटल पेमेंट स्कीम का हवाला देते हुए कहा की यह युवाओं की ज़िम्मेदारी है की उन लोगों को सिखाए जिनके लिए यह नया है। उन्होंने कहा ‘‘स्वच्छ भारत’’, ‘‘जन–धन’’ जैसी योजनाओं को आगे बढ़ाने के लिये युवाओं की ज़रूरत है। उन्होंने विश्वविद्यालय की प्रशंसा करते हुए कहा की यह 6 विश्वविद्यालयों में से एक है जहां योग विज्ञान का विभाग है। समारोह में भारतीय परिधान ने खूब रंग जमाया। डिग्री प्राप्तकर्ता सहित कुलपति, मुख्य अतिथि और सभी भारतीय परिधान में दिखे। दीक्षांत समारोह के परिधान मे बदलाव पर डॉ मिश्रा ने कहा की वेशभूषा के बदलाव ने भारतीय संस्कृति को और निखारा है। छात्र–छात्राओं ने सफेद पोशाक पर उतरिया पहनी थी। अलग–अलग विभाग के लिए अलग–अलग रंग की उतरिया निर्धारित थी। अपने संबोधन में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अरूण के पुजारी ने विद्यार्थियों के साथ–साथ उनके शिक्षक और माता–पिता को भी डिग्री प्राप्त करने पर बधाई दी। प्रो. पुजारी ने अपने व्याख्यान में कहा की विश्वविद्यालय को एक बार स्थापित होने की देर है उसके बाद इस विश्वविद्यालय का नाम भी भारत के प्रमुख विश्वविद्यालयों में शुमार हो जाएगा। उन्होंने बताया की प्रधानमंत्री की ओर से देश के 12 केंद्रीय विश्वविद्यालयों को एमिनेम्स स्कीम के तहत एक हज़ार करोड़ रूपए दिए जाएंगे इसमे राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय भी शामिल है। उन्होंने बताया की मानव संसाधन विकास मन्त्रालय ने नई पेयजल लाइन के लिए 25 करोड़ रूपए स्वीकृत कर दिए हैं। इससे स्वच्छ जल की आपूर्ति होगी। दीक्षांत समारोह का शुभारंभ आर्मी बैंड ने मुख्य अतिथि के स्वागत से किया। राष्ट्रगान के दौरान भी आर्मी बैंड ने मनोरम प्रस्तूति दी। कार्यक्रम में किशनगढ़ विधायक भागीरथ सिंह, रेंज आई जी मालिनी अग्रवाल, एस पी राजेंद्र सिंह और कलेक्टर गौरव गोयल भी मौजूद रहे।

Teaching Learning Centre organized Training Program on MOOCs

Dr. A. Patra & Dr. U. Gupta

In a recent move to further excel the academics of the University, a Teaching Learning Centre (TLC@CURaj), funded by the MHRD under the scheme of Pandit Madan Mohan Malaviya National Mission on Teachers and Teaching (PMMMNMTT), was established at Central University of Rajasthan under the visionary mentorship of Honorable Vice Chancellor Prof. A K Pujari. TLC@CURaj organized its first activity with a three-day training program on Massive Open Online Course (MOOCs) from March 12 to 14, 2018 mostly for the senior academicians with limited participant’s capacity across the India. This three days training program was attended by 27 participants from more than 10 different institutes of India. The participants were from more than 6 different states and from 14 different disciplines including arts, humanities and sciences. In this course, participants were exposed to emerging issues of internet-based culture, digital age learning, use of social media and digital tools for enhancing instructional delivery. A total of seven renowned speakers from premier institutes of India such as IIT Bombay, IIT Delhi, IIT Kanpur, INFLIBNET Ahemdabad, AICTE New Delhi and NCERT New Delhi were invited to deliver talks related to MOOCs and its importance. The organizing committee received an overwhelming response of the program from the participants and invited speakers. The chief guest during the inaugural session and valedictory sessions were Prof. Yaragatti, Director MNIT Jaipur and Prof. Bhagirath Singh Vice Chancellor MDS University, respectively.

More on Page 4

pages curaj varta 2018 march_Layout 1 18-04-2018 12:39 Page 2

8 March Special

Women's empowerment means equal opportunity and equal status

International women's day on March 8 focuses on looking into the issues and concerns of women nationally and internationally. Addressing women's issues is integral to national development as an Agenda 5 of UN Sustainable Development Goals is specific to Gender Equity. The students of Development Communication of the Department of Culture and Media Studies have expressed their opinions on development and gender issues. (The Editor)

International Women's Day in India

Mahima Singh

International Women's Day is a day to remember the sacrifices made by women across the world. It is a day to empower women economically and socially. The day aims to help nations worldwide eliminate discrimination against women. It also focus on helping women gain full and equal participation in global development. The day also reminds the contribution made by women for international peace. Women have struggled a lot in the past and are now able to walk shoulder-to-shoulder with men. They have achieved financial independence with education. So we need to celebrate the day with pride and honour.

It is great that we have a day like Women's day specifically a country like India which has completely been spoiled by many atrocities against women like rape, dowry, female infanticide, exploitation of women at work place and many more. Female illiteracy higher in the rural areas where over 63% women remain unlettered. In 2015, around 6787 dowry death cases were registered in India according to INCB reports. Many organisations public and private gear up to participate in various activities like mass rallies, seminars, documentaries and TV shows. NGO's are working towards uplifting women organise gender sensitive plays.

In India several organisations are working towards girl child education, eradication of dowry culture and reservation of seats for women in local panchayats. And several of these initiatives have helped in empowerment of women. Nevertheless a lot of work is still to be done in public and private sectors. Women's Day in India is celebrated to make people aware of all the progresses that have been done till date and the work that still needs to be done.

Women's Day is a way to recognise the contribution made by women in various facets of life. But women still have a long way and lots to achieve. Women today have made a mark in every aspect of life: academically, professionally and now politically.

Women empowerment and development

Pooja Yadav

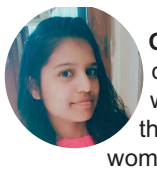

On March 8, world celebrates International women's day to realise the achievement of women in the society. In Indian context, we cannot deny that women have made a considerable progress in seven decades of independence, but they still have to struggle against many hardships, to be treated as equal as men in male dominated society. Women empowerment is a significant topic of discussion in development and growth in India. Women empowerment means equal opportunity, equal status with men in every social sphere. Women population constitutes around 50% of the country.

A large number of women in India are unemployed. The Indian economy suffers a lot because of the unequal opportunity for women at workplaces. Women empowerment implies developing an ability in women to take decision with regard to their life and work. It means equality of justice to all. We need to empower women in order to prevail justice for all in our society. If women are not empowerment, they cannot enjoy security and protection in their lives. Women empowerment also means to provide them a safe working environment.

According to statistics of United Nations, on average women make up about 43 per cent of agricultural labour force in developing countries. About 70 per cent of women in India work in agriculture. Women need to be educated and empowered so that they enjoy other job facilities other than agriculture. When more investment is made on human resource development of women, child nutrition, health and education improves. Education is essential for women empowerment.

According to global statistics, just 39 per cent of rural girls attend secondary school. Lack of education effects social status of women. They lack decision making and representation in legislature. All these factor discussed, shows that women empowerment for development is multidimensional. Women Empowerment helps to make the society and India a better place to live in and march forward on way to inclusive participation. The government has to make good policies for the upliftment of the women in India.

सामाजिक बुराइयाँ और विकास की अवधारणाए

रिंकू कुमार मीणा

सामाजिक बुराइयाँ और विकास की अवधारणाए पारस्परिक सम्बंधित है। अर्थात सामाजिक बुराइयाँ देश के विकास में बाधा डालती है। हमारे देश और हमारे समाज में कुछ सामाजिक बुराइयाँ प्रत्यक्ष रूप से महिलाओं से जुड़े हुए है जिसके बजह से हमारा देश और समाज आगे नहीं बढ़ रहा है। अक्सर यह नैतिक जीवन और नैतिक मूल्यों के मामलों में समस्याग्रस्त माना जाता है। समाज की आम बुराइयों में से बाल विवाह, दहेज प्रथा, डायन प्रथा, असमानता, महिला उत्पीडन आदि। ये बुराइयाँ समाज और समुदाय के लिये हानिकारक है। जिससे समाज के साथ–साथ देश का विकास में भी रोड़ा है। कुछ सामाजिक बुराइयाँ जो प्रत्यक्ष रूप से महिलाओं से सम्बंधित है जो हमारे देश को और भी पीछे ले जाती है। बाल विवाह– बाल विवाह एक ऐसी प्रथा है जिसकी बजह से हमारा देश विक. सित नही हो रहा है। बचपन में ही उसे एक जवान के लिए पत्नी बना दिया जाता है और गर्भ धारण के लिए और माता बनने के लिए मजबूर किया जाता है। अगर बचपन में शादी नहीं की गयी तो पड़ोसी उनके माता–पिता की निंदा करते हैं। उनको समाज से और उसके अधिकारों से अलग कर दिया जाता है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (National Family Health Survey, 2015–16) के रिपोर्ट के अनुसार शहरी क्षेत्रों में 17.5 प्रतिशत और ग्रामीण छेत्रों में 31.5: था। सर्वे के समय लगभग 8 प्रतिशत लड़कियां 15–19 वर्ष की थी जो पहले से ही माता गर्भवती थी। न्यायमूर्ति एम बी लोकुर और दीपक गुप्ता की पीठ की शीर्ष अदालत ने लड़कियों के स्वास्थ्य के बारे में चिंता व्यक्त करते हुए कहा था कि 23 मिलियन बाल दुल्हन है। इस बजह से बचपन में शादी कर देने से बालिकाएं न तो शिक्षा प्राप्त कर पाती है और न हीं उनका शारीरिक और मानसिक विकास हो पाता है जिससे वे देश के विकास में अपनी भूमिका निभा सके। दहेज प्रथा– भारतीय समाज की बड़ी बुराइयों में से एक दहेज प्रथा भी है जिसका अर्थ संपत्ति और धन से है। जिसमे एक दुल्हन उसके विवाह के समय अपने साथ पति के घर लेके आती है। यह एक रिवाज है जो भारतीय समाज के सभी वर्गों में अलग अलग रूप में प्रचलित है। वर्तमान में, दहेज समाज में खुशी और अभिशाप दोनों का रूप है। एक तरफ पति और उसके रिश्तेदार को खुशी है जो की नकद, महंगे कपड़े, बर्तन, फर्नीचर, गहने आदि प्राप्त करते है, जबकि दूसरी तरफ, दुल्हन के माता पिता के लिए अभिशाप है, जिन्हें अनावश्यक मांगों को पूरा करने के लिए भारी कीमत चुकानी पड़ती है। दूल्हा की तरफ से शादी के बाद भी दहेज की मांग कम नही होती। ससुराल में दुल्हन को अपमान, उत्पीडन, शारीरिक और मानसिक यातनाएं सहना पड़ता है। इस कारण से बहुत सी कन्याएं आत्महत्या भी कर लेती है। बहुत से समाज में लोग अपनी कन्याओं को उत्तम शिक्षा इसलिए नहीं दिलाते की पढ़ी–लिखी कन्या के लिए दहेज भी अधिक देना पड़ता है। डायन प्रथा– डायन प्रथा एक कुप्रथा है जो देश के ग्रामीण क्षेत्रों में काफी प्रचलित है, इसमें ग्रामीण औरतों पर डायन यानी अपनी तांत्रिक शक्तियों से नन्हें शिशुओं और औरतों को मारने वाली पर अंधविश्वास के कारण उस पर आरोप लगाकर निर्दयतापूर्ण मार दिया जाता है। यौन अत्याचार, उनके बाल काट देना, मुंडन कर देना और फिर गाँव से बाहर निकल देना भी इसमें शामिल है। पीड़िता महिलाओं का रोजगार भी छीन लिया जाता है। ये सारी बुराईयां देश के विकास को प्रभावित करती है। इन बुराइयों के कारण महिलाओं को समान अधिकार और अवसर नहीं दिए जाते हैं। सशक्तिकरण, शिक्षा, स्वरोजगार और आत्मनिर्भरता के बिना, महिलाएं देश के विकास में पूर्ण तरह से अपना योगदान नहीं दे पाती हैं। हमारे घर और समाज के विकास में बाधा डालते हैं। अपनी निजी स्वतंत्रता और स्वयं के फैसले लेने के लिये महिलाओं को अधिकार देकर उनको और अधिक सशक्त करने की आवश्यक्ता है। सभी क्षेत्रों में पुरुषों के समान महिलाओं को भी बराबरी में लाना है। देश, समाज और परिवार के उज्जवल भविष्य के लिये महिला सशक्तिकरण बेहद जरुरी है। विकास का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को समर्थ बनाना है क्योंकि सशक्त महिलाए आने वाली पीढ़ी के भविष्य को बनाने के साथ ही देश का भविष्य का सुनिश्चित करती है।

Is GST Gender Friendly? 12 Percent GST Makes Women Inaccessible to Sanitary Napkins

Raheem Khan

Every woman in the country should be able to access and afford sanitary napkins. Lack of awareness is big problem in India. We have to spread awareness in our society for use of sanitary napkins. Indian women desperately need affordable menstrual solutions, but many don't even know they need it. 12% GST makes sanitary napkins more inaccessible to women. Goods and Services Tax (GST), a new tax scheme was started in India from July 1, 2017. With the implementation of GST a slogan given was "one nation, one tax, one market". It has impact on various industries. The GST was welcomed by many, but at the same time some women activist have expressed their concerns over the issues of sanitary napkins.

A sanitary napkin must be considered as a fundamental right of every woman, as it is a necessity of every women. Instead of making sanitary napkins tax-free, Govt. has imposed 12 percent GST on this. This decision is deemed strange as some products like Sindoor and Bindis are tax free. Sanitary napkins are essential need for all adult women, and it is in a non-essential tax bracket. 12 Percent GST makes women inaccessible to Sanitary Napkins.

According to a survey (2010 Nielsen study) only 12% of India's 355 million menstruating women use sanitary napkins and the remaining 88% of women resort to shocking alternatives like unsanitized cloth, ash and husk sand. Around 70% of women say that their families cannot afford to buy sanitary napkins. Girls miss five days of school in a month during menstruation, which makes it 50 days a year. Around 23% of these girls drop out of school after they start menstruating. Incidents of Reproductive Tract Infection (RTI) are 70% more common among women who do not use sanitary napkins. Use of sanitary napkins also reduce the risk of cervical cancer.

महंगे सन्साधन के बिना भी अच्छा काम कर सकते हैं –प्रसाद पवार

महिमा सिंह

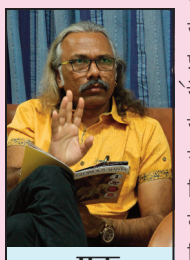

एक मुलाकात

प्रसाद पवार 27 वर्षों से अजंता गुफाओं की पेंटिंग्स का डाक्यूमेन्टेशन और डिजीटल रेस्टोरेशन कर रहें है. प्रसाद पवार सुप्रसिद्ध चित्रकार, फोटोग्राफर एवं पुरातत्वविद हैं.

कल्चर एवं मीडिया स्टडीज के विद्यार्थियों ने उनके साथ एक खास मुलाकात की. पेश है मुलाकात के खास अंश...

प्रश्न– आपने 27 वर्ष अजन्ता गुफाओं की पेंटिंग्स का रेस्टा. रेशन किया. आपका यह सफर कैसे शुरू हुआ?

उत्तर – 27 साल पहले मुझे भीतर से प्रेरणा मिली की अजन्ता गुफाओं की पेंटिंग्स का संरक्षण किया जाना चाहिए. 1989 में चित्रकला के विद्यार्थी के रूप में अजन्ता गुफअऊों की पेंटिंग्स का अध्ययन शुरू किया था. फिर मैने उन्हें कैमरे में केद कर डिजीटल रूप में संरक्षण और चित्रो का पुनर्निमाण किया.

प्रश्न – आपको इस काम के लिए सरकार से अनुमति मिलने में कितना समय लगा?

उत्तर – 18 वर्ष के लंबे संघर्ष के बाद आखिर 2009 में जाकर भारतीय पुरातत्व विभाग ने अनुमति प्रदान की.

प्रश्न – आपने बिना हेलोजन लैम्प और फ्लैश लाइट का इस्तेमाल किए कैसे काम किया?

उत्तर – एक साल पूरे 365 दिनों तक मैने गुफाओं में आने वाली प्रकृतिक रोशनी के चक्र का सिर्फ अध्ययन किया. उस वर्ष में सिर्फ एक चित्र खींच सका.

प्रश्न – आपने पेंटिंग्स के गायब हो चुके हिस्सों को पुन: कैसे बनाया?

उत्तर – शोध पर हजारों घंटे लगाए. प्राचीन संस्कृति को समझने के लिए महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, कर्नाटक, केरल जैसे राज्यों में 25 हजार किलोमीटर की यात्रा कर पुरातन चित्रों व शिल्पों का अध्ययन किया.

प्रश्न – क्या अजन्ता पेंटिंग्स में सुधार नहीं किया गया है?

उत्तर – नहीं. अजन्ता पेंटिंग्स को छूना भी मना है. इसलिए हम इसे डिजीटल तौर पर संरक्षित करते हैं.

प्रश्न – आज फोटोग्राफी, वीडिओग्राफी, डाक्यूमेंटेशन आदि सब डिजीटल हो गया है. लेकिन डिजीटल को हम किस तरह से संरक्षित कर सकते हैं ?

उत्तर – अभी इस दिशा में कार्य हो रहा है. ऐसी हार्ड डिस्क बनाने का प्रयास कर रहें हैं जो एटम बम से भी खराब ना हो.

प्रश्न – इस क्षेत्र में छात्रों के लिए भविष्य में क्या कुछ अवसर है?

उत्तर – ऐसे कोई अवसर नहीं है. अवसर हमें पैदा करने हैं. जिसकी रुचि हो वो हमारे साथ भी काम कर सकता है.

प्रश्न – अगर हम इस दिशा में काम करना चाहते हैं तो फंड के क्या विकल्प हैं?

उत्तर – अगर आपका आइडिआ अच्छा है. आपका काम अच्छा है तो फंड मिल जाता है. सरकार भी देती है, कई संस्थान है और क्राउड फंडिन्ग भी एक विकल्प है.

प्रश्न – अगर किसी के पास महंगे साधन नहीं हैं जैसे केमरा आदि. तब कैसे हम काम कर सकते है?

उत्तर – अगर आप कलाकार हैं. आपके पास क्रिएटिव आइडियज हैं तो आप महंगे सन्साधन के बिना भी अच्छा काम कर सकते हैं.

प्रश्न – आपकी भविष्य में क्या योजना है?

उत्तर – अब लक्ष्य अजन्ता की चित्र–शैली दुनिया के 100 करोड़ लोगों तक पहुंचाने का है. इसके लिए 'सेव अजन्ता' प्रोजेक्ट शुरू किया है. इस काम में युवा लगातार जुड़ रहे हैं और यह सिलसिला ऐसा ही चलेगा. ऐसा मुझे विश्वास है.

pages curaj varta 2018 march_Layout 1 18-04-2018 12:39 Page 3

University holds series of talks on the Nobel laureates

Vipul Kumar P Makwana

The Innovation Cell of CURAJ organised lecture series on Nobel Laureates in the auditorium on Feb. 02, 2018. The first day of the lectures began with the opening remarks of Vice-Chancellor, Prof. Arun K. Pujari. There were three panellist spoke on the day. Dr. Subhasis Bhadra (Department of Social Work) talked on Nobel Laureate (Peace), 2017. He talked on the topic: The Nobel Prize winning work for International Campaign to Abolish Nuclear Weapons (ICAN): A Movement for Nuclear Disarmament. Dr. Neeraj Panwar (Department of Physics) talked on Nobel Laureate (Physics). His topic was: Light Emitting Diodes: From Basics to Nobel Prize Winning Invention. Dr. Sanjay Arora (Department of English) talked on Nobel Laureate (Literature), 2017, and his topic was: The making of a Nobel laureate, Kasauo Ishiguro.

Dr. Subhashish Bhadra

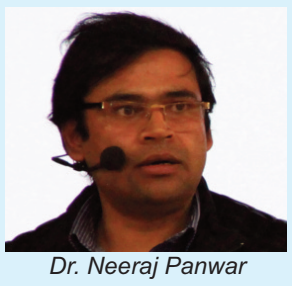

Dr. Neeraj Panwar

Dr. Sanjay Arora

The second day of the lecture series was organized on science day on Feb. 28 in the auditorium. In this lecture series Dr Pankaj Goyal (Department of Biotechnology) talked on Nobel Laureates (Chemistry), 2017, on the topic: Cryo-Electron Microscopy: A wonderful tool for exploring nano world. Mohd Hussain Kunroo (Department of Economics) talked on Nobel Laureate (Economics), 2017. He talked on the topic: Integrating Economics with Psychology: The Evolution of Behavioural Economics. Dr. Tarun K. Bhatt (Department of Biotechnology) talked on Nobel Laureate of (Physiology & Medicine), 2017, and his topic was Circadian Rhythms – Biological Clock. The innovation cell organizes seminars with the purpose of delivering motivational talks about the Nobel Laureates in a simple lay-man's language, so that everyone may understand and be inspired.

Dr. Pankaj Goyal

Mohd Hussain Kunroo

Dr. Tarun K. Bhatt

National science day celebrated

Pooja Yadav

Central University of Rajasthan Celebrated National Science day on 28th February at university auditorium. The event was organised by the Department of physics. On this occasion Professor Subhasis Chaudhuri from IIT Bombay was the Chief Guest on the occasion. The theme of this event was "science for sustainable Development of society". He delivered lecture on data science and information system. In his lecture, he spoke about C.V. Raman and his invention. Honourable Vice chancellor Arun K Pujari initiated the program by addressing the student. Students demonstrated many posters and models on the occasion. Student actively participated in science quiz and other activities. National science day is celebrated in India to mark the discovery of C.V.Raman. On that day in 1928, Sir C.V.Raman proclaimed the innovation of the Raman Effect. For his discovery, Sir C.V. Raman was awarded the Nobel Prize in Physics in 1930. National Science Day is being celebrated every year widely to spread a message about the importance of science in daily lives and usages of science for human welfare.

Escheria Festival Held in Curaj

Raheem Khan

Department of Microbiology organized Escheria-2018 festival from 20 to 22 February 2018. The festival of Escheria included various competitions such as Quiz, Madverstiers, Art Attack, Lifography, Poster Competition, Junk to Funk, Fast to Crack, X Factor, Science fair and Cultural events. In the event of X-Factor, the participant were asked to perform any hidden talent on open mic in three minutes. Raheem Khan from Department of Culture and Media Studies, Ankit from department of Management, Zabir from Department of MSW, Ramavatar Dhandha and many other students took part in in this event. In Lifography competition students submit the photographs of nature. In madverstier competition, student performed advertisement on the spot to sell the different product. In the Poster competition, students exhibited posters on Nobel prizes in Microbiology, in which Pooja Yadav from Department of CMS participated. Students Khushboo Mehta, Nitesh Kansara, Nishant Shekhar and Sristhi Lokwani coordinated the different events.

Math-Earth-2K18 Celebrated

Raheem Khan

The Department of Mathematics organized a week long program the Math-Earth-2K18 that concluded on Feb. 25. On the inaugural day a Movie The man who knew infinity was screened. The Movie was based on the life of great Indian mathematician Ramanujan. A competition of queries on movie was conducted soon after film show. Raheem Khan, a student from the Department of Culture and Media Studies got First Prize in this event. In Math Earth 2K18 various other competitions such as Problem of the day, Mini marathon for maths, Essay Writing, Ludo, Debate, Numbered Chair, Cultural event, Brain storming challenges, the flip side, Back benchers, treasure hunt, poster making, kisme kitna hai dum, play and earn, and Ramanujan cricket championship, were organized.

अनेकता में एकता के सन्देश के साथ मनाया मातृ भाषा दिवस

रहीम खान

अंतरराष्ट्रीय मातृ भाषा दिवस के अवसर पर राजस्थान केंन्द्रीय विश्वविद्यालय के सभागार में विभिन्न सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत उड़िया गाने के साथ हुई, उसके बाद हिमांशु गर्ग ने रा. जस्थानी गाना छोटी सी उमर सुनाकर श्रोताओं की तालियां बटोरी। निशा भारद्वाज ने छत्तीसगढ़ी, वर्षा रस्तोगी ने हरियाणवी, नीना चटर्जी ने बंगाली और जाबिर ने मलयालम में गाना सुना कर श्रोताओं का मनोरंजन किया। सपना और हरेंद्र ने राजस्थानी वेशभूषा में रैम्प वॉक किया। कार्यक्रम का समापन सभी धर्मों की वेशभूषा वाले फैशन शो के साथ हुआ। कार्यक्रम के द्वारा भारत में विद्यमान अनेकता में एकता का संदेश देने का प्रयास किया गया। इस अवसर पर सोशल साइंस स्कूल के डीन प्रो. डॉ. अम्बेडकर, कल्चर एवं मीडिया विभाग में सहायक आचार्य डॉ. नीरू प्रसाद, डॉ. निकोलस लकड़ा सहित अन्य फैकल्टी मेंबर और विश्वविद्यालय के सभी छात्र छात्राऐं उपस्थित थे। अंतरराष्ट्रीय मातृ भाषा दिवस प्रति वर्ष 21 फरवरी को मनाया जाता है।17 नवंबर 1999 को यूनेस्को ने इसे मंजूरी दी थी। इस दिवस को मनाने का मकसद विश्व में भाषाई एवं सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देना है। भारत विविधताओं का देश है जहां विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों और भाषाओं को बोलने वाले लोग रहते है।

Photo: Vipul Makwana

CMS scholar speaks on impact of media on society

Vipul Makwana

Department of Culture and Media Studies organised its first Pre-PhD seminar of scholar Armendra Amar on 15th February. Scholar was defending his study under the topic 'An analysis of reflect effect studies of media on society: A case study of Bhopal gas tragedy'. He answered various questions of the committee members Prof S N Ambedkar, HOD CMS & Dean Social Sciences, Dean's Nominee and external examiner Dr. Subhashish Bhadra, Head department of Social work, other faculty members Dr Nicholas Lakra, Dr. Pranta Pratik Patnaik, Dr. Jadav, Mr Debajit Bora. Faculty members and research scholars from different departments were also present in Seminar. Armendra is doing his research under the supervision of Dr. Neeru Prasad.

pages curaj varta 2018 march_Layout 1 18-04-2018 12:39 Page 4

Performing Yoga for excellence in action

Dushyant Soni

The Central University of Rajasthan initiated Yoga activities in academic session 2017-18 with the purpose of imparting Yoga education and its ethics that prevails in India as Yoga System since ancient time. Yoga is one of the six systems of philosophy in India. Yoga promotes holistic well-being of a person. The session of Yoga practice is conducted every day at 6.30 to 7.30 morning in the Central Auditorium of the University. This session is open to all the students and faculty members, non-teaching staff in the campus. There are about 50 participants take part in the Yoga practice everyday. A system of attendance is maintained.

The daily session begins with Vedic chants which lead to healthy and calm soul. The Vedic chanting helps the participants to immerse in themselves in sounds, quieting the distractions of their minds. In that process, the yogic participants perform preliminary practices like jogging stretching, etc. to prevent injuries and make yoga session more effective. After doing the preliminary practices, the Yoga session continues with various basic Asanas (pavanamuktasana series, surya namaskar) , breathing exercises (pranayama), meditation.

Mr. Mehboob Hussain, a well trained and experienced Yoga instructor conducts yoga session and is always available for theoretical instructions in the campus. He explains the participants about each practice and its effects thoroughly. Participants who take part on regular obasis report that Yoga sessions help them relieve their stress. It increases strength and flexibility, greater spiritual awareness, improve power of concentration, enhance self-esteem and self-discipline. Bhagavad Gita says *yogaḥ karmasu kauśalam* meaning excellence in action is Yoga, is becoming true to the participants here in the university.

अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य कल्याण के लिए साझा कार्यक्रम संपन्न

रिंकू कुमार मीणा

राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग ने दिनांक 11 से 13 जनवरी 2018 को 'इंटरनेशनल कोलोक्वियम ऑन 'प्राइमरी हेल्थ केयर इन इंडिया – प्रैक्टिसेज एंड चौलेंजेज' विषय पर अंतरराष्ट्रीय वार्तालाप का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में सेंट एम्ब्रोस विश्वविद्यालय–समाज कार्य विभाग से प्रोफेसर डॉ. जोहनी अगस्टीन के साथ 5 छात्रों का 6 दिवसीय यात्रा पर विश्वविद्यालय में थे। विदेशी छात्रों और शिक्षकों का अध्ययन हेतु आगमन, राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय के लिए एक विशिष्ट अवसर था।

कार्यक्रम के प्रथम दिन परिचय कार्यक्रम का आयोजन हुआ। दोनों विश्वविद्यालयों ने अपने–अपने विश्वविद्यालयों की जानकारी दी। उसके बाद प्रतिभागी विद्यार्थियों को विभिन्न दलों में अनौपचारिक चर्चा के लिए भेजा गया। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने अपने–अपने अनुभव एक दूसरे के साथ साझा किये। फिर सामूहिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमे अध्यापकों ने विद्यार्थियों को कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी। उसके पश्च्यात दोनों देशो के विद्यार्थीयों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। दूसरे दिन औपचारिक सेमिनार संपन्न हुआ। इस सेमिनार का विषय प्राइमरी हेल्थ केयर इन इंडिया–प्रैक्टिसेज एंड चौलेंजे था। सेमिनार में दोनों देशो के अध्यापक–गण ने अपने देशो में चल रहे स्वास्थ्य कार्यक्रम की जानकारी दी। तीसरे दिन विद्यार्थीयों का दल पाटन स्थित बेयरफुट कॉलेज शैक्षिक भ्रमण के लिए गए।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य अपने देश की संस्कृति और शिक्षा व्यवस्था को साँझा करना था। कार्यक्रम का आयोजन समाज कार्य विभाग के असिस्टेंट प्रो. राजीव एम एम द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में केंद्रीय विश्वविद्यालय राजस्थान के डीन प्रो. एस एन अम्बेडकर (सोशल साइंस), समाज कार्य विभागाध्यक्ष प्रो. सुभाशीष भद्रा, एसोसिएट प्रो. जगदीश जाधव, व अन्य सभी अध्यापक–गण और विद्यार्थी उपस्थित थे।

कार्यशाला में सीएमएस के छात्रों ने लेखन कला सीखा

रहीम खान

मीडिया फाउंडेशन द्वारा भारतीय युवा संसद के सहयोग से 9, 10 जनवरी, 2018 को न्यू मीडिया आमुखीकरण कार्यक्रम और कौशल विकास कार्यशाला का आयोजन मालवीय प्रोद्योगिकी संस्थान, जे.एल.एन. मार्ग,जयपुर,में किया गया।

कार्यशाला में राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय के कल्चर एवं मीडिया स्टडीज के छात्र रहीम खान, रिंकू मीणा, विपुल मकवाना एवं महिमा सिंह ने भाग लिया। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के सभी प्रतिभागियों ने सक्रिय भागीदारी निभाते हुए आयोजकों से मीडिया से सम्बंधित प्रश्न किये। कार्यशाला के दौरान आयोजित रिपोर्ट लेखन प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के छात्र रहीम खान ने उत्कृष्ट लेखन के लिए पुरूस्कार जीता। कार्यशाला में राजस्थान विश्वविद्यालय, जेएनयु, अमिटी आदि विश्वविद्यालय के छात्र छात्राओं ने भी भाग लिया। राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय के छात्र कार्यशाला में अग्रणी रहे। कार्यशाला के समापन पर सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

लैंगिक आधार पर नहीं हो किसी के साथ भेदभाव–डॉ. शैजी

रहीम खान

16 फरवरी 2018। केंद्रीय विश्वविद्यालय राजस्थान के सोशल साइंस विभाग के विद्यार्थियों के लिए स्पर्श (SPARSH &Sensitization, Prevention and redressal of sexual harassment) कमेटी द्वारा एक सेमीनार का आयोजन किया गया। सेमीनार का आयोजन छात्र छात्राओं के बीच लैंगिक समानता और सेक्सुअल हरैसमेंट के बारे में जागरुकता फैलाने के उद्देश्य से किया गया था। सेमीनार में स्पर्श कमेटी में काउंसलर और सोशल वर्क विभाग में सहायक आचार्य डॉ. शैजी ने यूनिवर्सिटी शिकायत कमेटी के बारे में बताते हुए शिकायत दर्ज करवाने और उसके निस्तारण की प्रक्रिया को विस्तार से समझाया। सोशल वर्क विभाग के ही सहायक आचार्य डॉ. डी पी नेगी ने क्विज के माध्यम से लैंगिक समानता और संवेदनशीलता को छात्र छात्राओं को समझाया।

सेमीनार के अन्त में सभी विद्यार्थियों ने स्पर्श कमेटी के सदस्यों से सेक्सुअल हरैसमेंट को लेकर प्रश्न किये और लैंगिक समानता की बात करते हुए छात्र छात्राओं के लिए छात्रावास और पुस्तकालय का समय समान करने की भी मांग उठाई।इस अवसर पर सोशल साइंस स्कूल के डीन प्रोफेसर डॉ अम्बेडकर, कल्चर एवं मीडिया विभाग में सहायक आचार्य डॉ. नीरू प्रसाद, डॉ. प्रगति सहित अन्य फैकल्टी मेंबर और अन्य विभागों के छात्र छात्राऐं उपस्थित थे।

सेंट्रल यूनिवर्सिटी में पहली बार शुरू होगा डिजिटल सोसायटी कोर्स

रिंकू कुमार मीणा

राजस्थान की एकमात्र केन्द्रीय यूनिवर्सिटी एक ऐसा कोर्स प्रारंभ करने जा रही है जिसका सीधा संबध प्रधानमंत्री मोदी की डिजिटल इंडिया मुहीम से है । डिजिटल इंडिया की मुहीम को पेशेवर पाठ्यक्रम के रूप में विकसित करने के लिए सेंट्रल यूनिवर्सिटी रा. जस्थान ने इंटरनेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी बेंगलोर के सहयोग से एम.ए./एमएससी इन डिजिटल सोसायटी नाम से कोर्स शुरू करने जा रही है।

इस कोर्स के समन्वयक डॉ ज्ञानारंजन पांडा के अनुसार इस कोर्स की शुरुआत होने से हमारे देश के विद्यार्थियों को डिजिटल सोसायटी कोर्सेज की पढाई के लिए विदनहीं जाना पड़ेगा। देश में इस बार चार नए कोर्स लांच हुए है जिनमे डिजिटल सोसायटी एक ऐसा कोर्स है जिसका परिणाम भविष्य में सोशल साइंस और एडवांस टेक्नोलॉजी में दिखाई देगा। भारत में इस कोर्स को प्रारंभ करने वाला राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय एकमात्र संस्थान है इन देशो में पहले से हो रही है डिजिटल सोसायटी की पढाई यह कोर्स ओक्सफर्ड यूनिवर्सिटी , एडिनबर्ग यूनिवर्सिटी , ऑस्ट्रेलिया , चाइना , यूनाइटेड किंगडम जैसे देशो में पहले ही प्रारंभ हो चूका है द्य यह एक इंटरडिसिप्लिनरी कोर्स है। इसको बढ़ावा देने के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने कई कार्यक्रम प्रारंभ किये है। हाल के वर्षों में, कई विकसित देशो ने 5g और 6g परिनियोजन के रास्ते में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। वही भारत में टेक्नोलॉजी की सुस्त रफ्तार डिजिटलाइजेशन की दिशा में प्रमुख बाधा है। लेकिन बीते कुछ वर्षो में सरकारी एवं निजी संगठनों के साझा परिणामो के प्रयासों के फलस्वरूप इसमें ऐतिहासिक तेजी दर्ज की गयी है। डिजिटल सोसायटी का सपना धीरे धीरे हकीकत का रुप लेने लगा है इस कारण इस क्षेत्र से जुड़े पेशेवर पाठ्यक्रमो में भविष्य में अपार रोजगार की संभावनाए हैं।

भविष्य में है अपार संभावनाए

हम असीम प्रगति, प्रेरणादायक खोजों और अनगिनत ज्ञान के विस्तार से घिरे हुए बहुत ही रोमांचक समय में रहते हैं। इन्टरनेट और टेक्नोलॉजी के अविष्कार ने हमारे जीवन को अभूतपूर्व रूप से प्रभावित किया है द्य इंटरनेट का भविष्य बहुत हद तक इस बात पर निर्भर करेगा कि हम किस तरह प्रमुख बाधाओं को दूर कर सकते हैं जो इसकी क्षमता में बाधा डालती हैं

हिन्दी विभाग में साहित्यिक परिचर्चा

हिन्दी विभाग में सप्ताह के हर शुक्रवार को 'साहित्यिक परिचर्चा' के अंतर्गत विभाग का प्रत्येक शोधार्थी अपने विषय से संबन्धित पी. पी. टी. प्रस्तुतीकरण करता है । 9 फरवरी को डॉ. जितेंद्र कुमार सिंह के निर्देशन में शोधरत शोधार्थी श्री सर्वेश कुमार मिश्र ने 'काशीनाथ सिंह : एक अंतरंग परिचय' विषय पर अपना प्रस्तुतीकरण देते हुए काशीनाथ

सिंह के साहित्यिक अवदान का विवेचन किया । 16 फरवरी को डॉ. जितेंद्र कुमार सिंह के निर्देशन में शोधरत शोधार्थी श्री आशीष कुमार मिश्र ने 'भैरव प्रसाद गुप्त की कहानियों में स्वतंत्र्योत्तर समस्याग्रस्त समाज और नयी कहानी आंदोलन का दौर की समस्याएँ' विषय पर अपना प्रस्तुतीकरण देते हुए भैरव प्रसाद गुप्त के रचना संसार पर अपने विचार रखे । 2 फरवरी को डॉ. संदीप रणभिरकर के निर्देशन में शोधरत अशोक कुमार चारण ने 'शब्दशिल्पी कवि केदारनाथ सिंह : एक परिचय' विषय पर प्रकाश डालते हुए केदार जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का मूल्यांकन किया ।

TLC to organise induction program

From page 1

The Teaching Learning Centre [funded by MHRD New Delhi under the scheme of Pandit Madan Mohan Malaviya National Mission on Teachers and Teaching (PMMMNMTT)] at Central University of Rajasthan (TLC@CURaj) is going to organize 'Four Weeks Induction Training Programme' for the Faculty Members from May 1st to 26th May, 2018.

In this induction program the participants will be exposed to new and effective methods of teaching and learning. The goal is also to promote the discipline-specific curricula pedagogy, learning materials (including e-content, MOOCs etc.) for the use by the teachers in colleges and postgraduate departments/institutions. Learners will explore the use of emerging technologies and their integration into higher education. The program is also intended to familiarize the faculty members with the university governance and administration.

There will be around 50 participants mainly faculty members (regular/adhoc/temporary) who are in their initial years of teaching profession.

Editor
Dr. Nicholas Lakra
Assistant Professor
Department of CMS

Head of the Department
Prof. S.N. Ambedekar
Department of CMS

Editorial Advisory Board
Dr. Pranta Pratik Patnaik, Assistant Professor
Mr. Debajit Bora, Assistant Professor
Dr. Neeru Prasad, Assistant Professor
Department of CMS

Designer
Vipul P Makwana
Pooja Yadav
Mahima Singh
Students, CMS II Sem

Published by the Department of Culture and Media Studies, Central University of Rajasthan, NH-8, Bandarsindri, Kishangarh, Ajmer-305817, Rajasthan, India